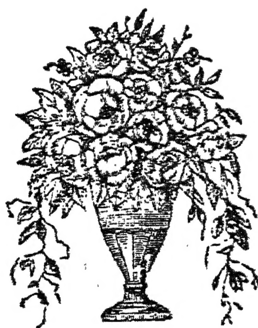
बिरहा।

नायिकाभेद

बाबू रामकृष्णवर्म्मा

उपनाम बलवीर कृत।



काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ।

सन् १९०० ई०।

भूमिका ।

इस विरहे छन्द की चाल हमारे इस पश्चिमोत्तर प्रान्त में प्राय: छोटी जातों अर्थात् अहीर कहार और गँड़ेरियों में बहुत है, परन्तु जैसा यह छन्द रोचक है वैसी साधु कविता इसमें नहीं देखी जाती। यदि इस छन्द में भी उत्तम कविता का प्रचार होता तो इन जातियों में भी उच्च जाति की नाईं नायक नायिका और अलङ्कार इत्यादि का ज्ञान भली प्रकार होजाता। प्राय: इन जातियों में पढ़ने लिखने की चाल बहुत कम है। इन बिरहों के छापने से एक तात्पर्य्य हमारा यह भी है कि इन लोगों में पढ़न लिखने की रुचि हो जावै, हमे विश्वास है कि बिरहों की उत्तमता से कदाचित् ऐसा ख्याल इन लोगों को हो "पढ़ ले मरदे, देवनागरी में तो बलबिरवा का बिरहा छपल् हौ आठ दिन में त देवनागरी आवैला"। इस छन्द में प्रत्येक चरण में दो जगह यति होती है, प्रथम यति १६ अक्षर पर और दूसरी दस अक्षर पर। अन्त में एक गुरू और लघु दोहे की नाईं होते हैं। दोनों चरणों के प्रथम पद में दो अक्षर बढ़ भी सकते हैं अर्थात् १८ अक्षर और १० अक्षर का भी चरण होता है जैसे बिरहा नं० १० और बिरहा नं० २४, कहीं कहीं मीड़ के साथ एक अक्षर खींच लेनेसे प्रत्यक्ष

में तो एक अक्षर की कमी दिखाई पड़ती है परन्तु यथार्थ में कमी नहीं है, एक अक्षर के उच्चारण का समय उसी मीड़ के साथ आ गया है जैसा बिरहा नं॰ १३ और नं॰ २३ में देखो । मीड़ की जगह पर हमने सर्वत्र ऽ चिन्ह बना दिया है । गान विद्या और पिङ्गल में जो घनिष्ट सम्बन्ध है उसे हमारे मित्र काशीनिवासी बाबू जगन्नाथप्रसाद उपनाम रत्नाकर कवि जी ने भली प्रकार दिखाया है । इन बिरहों में प्रायः ग्रामीण शब्दों और ग्रामीणही ख्यालों पर विशेष ध्यान रक्खा गया है। नायिकाओं के लक्षण लिखने में हमने श्रीमान् अयोध्यानरेश आनरेबुल सर महाराजा प्रतापनारायणसिंह बहादुर कृत रसकुसुमाकर से विशेष सहायता ली है। अभी शीघ्रता में केवल नायिका भेदही लिखा गया है उसमें भी अनेक उदाहरण रह गये हैं, आशा है कि कुछ दिन उपरान्त नायकभेद षट्ऋतु, संचारी, हावादि, सखा सखी, उद्दीपन विभावादि तथा अलङ्कारों को भी इस छन्द में हम प्रकाश करेंगे । जो कुछ त्रुटि शीघ्रता या ज्ञानदोष से अभी रह गई हो उसे रसिक पाठक गण क्षमा करेंगे ।

रामकृष्ण वर्म्मा

उपनाम बलबीर कवि

काशी ।

नायिकाभेद, बिरहाराग में।

बाबू रामकृष्णवर्म्मा उपनाम बलबीर कृत।

आलम्बन विभाव।

जिसके आश्रय से रस का ठहराव होता है, उसको आलम्बनविभाव कहते हैं, जैसे नायिका और नायक॥ १॥

लजिया दबावै मनमथवा सतावै
मोसे, एको छन रहलो न जाय।
लखि बलबिरवा जमुनवा के तिरवाँ री
हियरा क धिरवा नसाय॥ १॥

नायिका।

सुन्दर और जवान स्त्री को नायिका कहते हैं, इनके कर्म्मानुसार ३ भेद हैं, स्वकीया, परकीया और सामान्या। और उमर के अनुसार भी ३ भेद हैं, मुग्धा, मध्या, और प्रौढ़ा॥ २॥

रुपवा के भरवा त गोरी से पयरवा
रे सोझवा धरल नाहीं जाय।

लचि लचि जाला दैया गोरी की क-
मरिया जोबनवाँ के बोझवा दबाय ॥२॥
तसवा की सरिया में सोने क कि-
नरिया उँजरिया करत मुखजोति ।
अगर बगर जर-तरवा लगल बड़
जगर मगर द्युति होत ॥ ३ ॥
जोबना उलहिया री नवकी दुलहिया हौ
गोरा गोरा गोरी तोरा गाल ।
चकवा सरिस तोरा जोबना लसत
देह, दिपै मानो सोना क मसाल ॥ ४ ॥
गोरिया छबीली तोरी अँखिया रसीली
भोरी बतिया रँगीली रसखान ।
मुखचँदवा बिमल दोउ जोबना कमल
बलबिरवा क जियरा परान ॥ ५ ॥

स्वकीया ।

केवल अपनेही पति से प्रेम रखनेवाली स्त्री को स्वकीया कहते हैं । यथा:—

आज बरसाइत रगरवा मचावो जिन
नहकै झगरवा उठाय ।
अपनों ही बरवा मैं पूजौं बलबिरवा
पीपरवा * पूजन तूही जाय ॥ ६ ॥

मुग्धा ।

जिस स्त्री को यौवन उभड़ आया हो परन्तु उसे काम की इच्छा न हो उसे मुग्धा कहते हैं, इनके दो भेद हैं, अज्ञातयौवना और ज्ञातयौवना । जिस मुग्धा को अपने जवानी आने की खबर नहीं है, उसे अज्ञातयौवना कहते हैं, और जिस मुग्धा को अपनी जवानी का ज्ञान है, उसे ज्ञातयौवना कहते हैं इनके दो भेद हैं, नवोढ़ा और विश्रब्धनवोढ़ा ।

अज्ञातयौवना का उदाहरण ।

तैहूं न बतावै गोइयां झूरे भरमावै
काहे सवती क मुहवां नराज ।

* पीपर का वृक्ष अथवा पराया पी । बरसाइत के दिन बर (वृक्ष) की पूजा होती है । बर से तात्पर्य बट वृक्ष का भी है और अपना बर अर्थात् अपने पति का भी है ।

मोरी छतियाँ पै करवा सुरख बलबिरवा री
अँखिया मुँदत केहि काज ॥ ७ ॥

भर भर आवैं मोरी अँखिया न जानूँ
काहे देखे क लगला बड़ चाव ।
ओहू मोहे छिप छिप सजनी निहारैं
बलबिरवा क नतवा बताव ॥ ८ ॥

बईद हकीमवा बुलाओ कोइ गुइयाँ
कोई, लेओ री खबरियाऽ मोर ।
खिरकी से खिरकी ज्यों फिरकी फिरत
दुओ, पिरकी उठल बड़े जोर ॥ ९ ॥

ज्ञातयौवना ।

हथ गोड़वा क ललिया निरख कै छबि-
लिया मगन होला मनवाँ मझार ।
हेरी हेरी जोबना निहारै दरपनवाँ मैं
बेरी बेरी अँचरा उघार ॥ १० ॥

उठलैं जोबनवां नैहर के भवनवां
गवनवां भयल दिनचार ।
भावै नाहीं गोरिया के गुड़िया क खेल
नींक लागे बलबिरवा भतार ॥ ११ ॥
फिरलीं रोहनियाँ जोबनवाँ क पनियां
जवनियां चढ़ल घनघोर ।
रोवैलीँ सवतिया निरखि कै पिरितिया
बढ़त बलबिरवा क जोर ॥ १२ ॥
तोहरी नजरिया री प्राऽनपिआरिया
मछरिया कहलैं कवि लोग ।
तोहरा जोबनवां त बेलवा क फल
बलबिरवा के हथवाही जोग ॥ १३ ॥

नवोढ़ा ।

जो नायिका लाज और भय से अपने पति से नहीं मिला चाहती उसे नवोढ़ा कहते हैं, जैसे:—

हथवा पकरि दुओ बहियां जकरि पिय
सेजिया बैठावैं जस लाग ।

झटक पटक मानो बिजुरी छटक
बलबिरवा के कोरवा से भाग ॥१४॥

विश्रब्धनवोढ़ा ।

जिस नवोढ़ा को अपने पति पर कुछ २ प्रेम और विश्वास जमने लगता है उसे विस्रब्धनवोढ़ा कहते हैं, जैसे:—

धुकुर पुकुर सब अपनै छुटल अब
रसे रसे जियरा थिरान ।
सेजिया के धोरे गोरी जाके देवे लागल्
बलबिरवा के हथवा में पान ॥ १५ ॥

मध्या ।

जिस नायिका को लाज और कामदेव दोनों बराबर हों उसे मध्या कहते हैं। यथा

बगरै सुतैलीं मोरी ननदी जिठनियां
विअहवल दुलहवा मैं लजाउँ ।
रतियां के उठैं सैयां चोरवा की नैयां मै त
लाजन धरातिया गड़िली जाउँ॥ १६ ॥

(चिरजीव)

लजिया की बतिया मैं कैसे कहौं ए
भौजी जे मोरे बूते कहलो न जाय ।
पर के फगुनँवा की सिअली चोलियवा
में असों न जोबनवाँ अमाय ॥ १७ ॥

प्रौढ़ा ।

जो नायिका बिहार में अत्यन्त चतुर और पूरी होती है, उसे प्रौढ़ा कहते हैं, प्रौढ़ा के २ भेद हैं, रतिप्रीता और आनन्दसंमोहिता ॥ १४ ॥

छतियां लगति रस बतियां पगति
सारी रतियां जगति बिच केल ।
मैया भैया न सुहावै मनमथवा सतावै
मन भावै बलबिरवा क खेल ॥१८॥

रतिप्रीता ।

जो नायिका नायक के पाने पर यह मनावे कि भोर न हो और उसका नायक चला न जावे, उसे रतिप्रीता कहते हैं ॥ १५ ॥

दैया दैया कैके बलबिरवा मैं पायो
गुइयाँ सेजिया सुवायों सुखधाम ।

गोरवा लगों मैं आली सोरवा मचाओ
जनि भोरवा क लेओ मत नाम ॥ १९ ॥

आनन्दसंमोहिता ।

जो नायिका अपने नायक के रति और प्रीति के आनन्द में मोहित होकर मगन रहती है, उसे आनन्दसंमोहिता कहते हैं, यथा—

कल रतियाँ की बतियां सुमिरि मोरी गुइयां मोरे उठला करेजवा मे पीर ।
मोहि छतियां लगौलेस् रस घतियां मचौलेस्, सारी रतियां जगौलेस् बलबीर ॥
ओठरसवा अँचौलेस् नखचिन्हवा खँचौलेस् सज्जे रतियाँ मचौलेस् घमासान ।
जिय पिरवा मिटौलेस् छन छाती न हटौलेस्, बलबिरवा न तनिको अघानै ।२१।

धीरा ।

नायक के शरीर पर दूसरी स्त्री के रति के चिन्ह देख कर आदर और धीरज सहित जो नायिका अपना कोप प्रकाश करै उसे धीरा कहते हैं, यथा ॥

सोनवा क पनवा क मोतिया क हिरवा क
काहे क बनल यह माल ? ।
गरवा से हरवा उतारो बलबीर तनी
मोहूँको दिखाओ मोरे लाल ॥ २२ ॥

अधीरा ।

इसी प्रकार आदर सहित प्रत्यक्ष कोप करनेवाली स्त्री को अधीरा कहते हैं, यथा

झूरे झूरे दोषवा लगावैं बलबीर तोहें
लबरी सजनियांऽ मोर ।
रतियां के आवैं तौन चोरवा कहावैं तुम
सहुआ जे आये मोरे भोर ॥ २३ ॥

धीराधीरा ।

इसी प्रकार कुछ छिपा और कुछ प्रगट तथा आंसू सहित कोप प्रकाश करनेवाली स्त्री को धीराधीरा कहते हैं ॥

मुँह पिअरी परल दुओ अँखिया भरल
तोरा दुखवा न होला अनुमान ।
मोहँ दुखवा कवन मोरे सुख के भवन जहाँ
तुमसे रसीले मोरे प्रान ॥ २४ ॥

परकीया ।

छिपे छिपे पर पुरुष से प्रेम रखनेवाली स्त्री को परकीया कहते हैं, परकीया के दो भेद हैं। ऊढ़ा, और अनूढ़ा, पराये पुरुष से प्रेम रखनेवाली व्याही हुई स्त्री को ऊढ़ा कहते हैं।

और पराये पुरुष से प्रेम रखनेवाली कुआरी स्त्री को अनूढ़ा कहते हैं यथा ॥

अनूढ़ा ।

जनम जनम कर पुनवाँ क फल मोरे
गवरि गोसाइनि हेरि ।
मैया जोर करवा मैं माँगो इहै वरवा जे
कीजे बलबिरवा की चेरि ॥ २५ ॥

गुप्ता ।

पर पुरुष के मिलाप को छिपानेवाली स्त्री को गुप्ता कहते हैं, इनके तीन भेद है, भूतगुप्ता वर्तमानगुप्ता, और भविष्य गुप्ता ॥ २० ॥

भूत गुप्ता ।

ननदी जिठनियाँ रिसावैं चाहे गोइयां
चाहे मारैं मोहिं ससुरा भतार ।

बगरै की कोठरी मे सूतब न दैया
उहाँ झपटला मुसवा बिलार ॥ २६ ॥

वर्तमान गुप्ता ।

मत मनवाँ में अनवाँ समुझ कुछ गुइयां
काहे सुँघली हौं मुहवाँ अहीर ।
मुँह सूँघे के करनवा क इतनै बखनवा
मखनवा खैलेस् बलबीर ॥ २७ ॥
भरली गगरिया उठौली जैसे गोइयां
तैसे बिछलल गोड़वा हमार ।
जो पै बलबिरवा न बहियां धरत
तो पै बही थी जमुनवां के धार ॥२८॥

वचनविदग्धा ।

बोलचाल की चतुराई से जो स्त्री पराये पुरुष से अपने प्रीति का काम निकाले उसे वचनविदग्धा कहते हैं, जैसे:—

सखी न सहेली मैं तो पाड़िल्यूं अकेली
मोरी, सोने सी इजतिया बचाव ।

हथगोड़वा मेँ मेहँदी लगल बलबीर मोरा
गिरला अँचरवा धराव ॥ २९ ॥

स्वयंदूतिका (यह भी वचनविदग्धा का एक भेद है)

सासु मोरी अँखिया की अँधिया, छयल
परदेसवाँ छयल अठवार ।
कवनो जतन दुओ दुखवा हटा दे
बलबिरवा सगुनवाँ विचार ॥ ३० ॥

लक्षिता ।

जिस नायिका की पराये पुरुषवाली प्रीति उसके लक्षण इत्यादि से जान ली जावे उसे लक्षिता कहते हैं जैसे

नख-छोलिया लगल तोरी बोलिया द-
बल सजे चोलिया पसिनवाँऽ भीन ।
सब भेदवा खुलल तोरे हियरे परल
बलबिरवा के हरवा क चीन ॥ ३१ ॥

कुलटा ।

अनेक पुरुषों से संभोग करने पर भी तृप्त न होनेवाली स्त्री को कुलटा कहते हैं जैसे

आधी जग मुइयां आधी नदी ताल

कुइयां आधा मरद से बुढ़वा बेराम ।
ससुर भसुर छोड़ बचलैं केतने मोहैं
नहकै करलैं बदनाम * ॥ ३२ ॥

अनुशयाना ।

जिस स्त्री का पर पुरुष मिलने का संकेत स्थान नष्ट हो जाये उसे अनुशयाना कहते हैं, जैसे—

सनहू उजारैं गुइयाँ उखियौ उपारैं ई
किसनवन के तनिकौ न हेत ।
कवनो पुरनवा न बेदवा बखानैं अर-
हरिया क काटौ जनि खेत † ॥ ३३ ॥

* इस संसार में आधो पृथ्वी है जिसका आधा भाग नदी ताल इत्यादि से ढका है, जो बची है उसमें भी आधे ही पुरुष हैं आधो स्त्रियां, उन आधे पुरुषों में भी आधे लड़के बूढ़े और बीमार हैं, तिस में भी ससुर भसुर को छोड़ कर बाकी बचही कितने गये जो मुझे कुलटा कुलटा कह कर नाहक बदनाम करते हैं ॥ † जैसे पीपल और तुलसीके वृक्ष काटने की मनाही है वैसे ही सन और अरहर इत्यादि के काटने की मनाही क्यों नहीं का ?

जिसका नायक संकेत स्थान से लौट आवे और नायिका वहां न पहुचने का पश्चाताप करती हो वह भी अनुशयाना का एक भेद है यथा ॥

हँसी खुसी गोइयां मोरी बगिया पधारी तन जोतिया बरत महताब ।
देखतै गोरी क मुँह-रँगवा उड़ल बलबिरवा के हथवा गुलाब ॥ ३४ ॥

सामान्या ।

केवल धन के निमित्त प्रेम करनेवाली स्त्री को सामान्या कहते हैं । यथा—

सुनो सुनो सैंया कहल बोली मोरी गोइयां तोरा हरवा बनल सब ठीक ।
मोतिया के बिच बिच हिरवा जो होते बलबिरवा लगत बड़ नीक ॥ ३५ ॥

गणिका गच्छत्पतिका ।

फेटवा पकरि गोइयां भेटवा को ठाढ़ी मोरे पेटवा में उठला अनेस ।

हिरवा क हरवा सु गरवा क देके बल-
बिरवा चलल परदेस ॥ ३६ ॥

अन्य सुरतदुःखिता ।

अपने नायक की सुरत के चिन्ह को अन्य स्त्री पर देख-कर खेद करनेवाली स्त्री को अन्यसंभोगदुःखिता कहते हैं यथाः—

प्यारे को बुलावन पठाई तोकों गुइयां
जिन हाँफै री सुनावै मोंहि हाल ।
परम रँगीली मोरी सजनी रसीली
कैसे पायो बलबिरवा रसाल * ॥३७॥

गर्विता ।

जो नायिका अपने नायक के प्रेम अथवा अपने रूप का गर्व करे उसे क्रम से प्रेमगर्विता वो रूपगर्विता कहते हैं । यथाः—

* नायक को रसाल और अपनी सखी को जो रसीली कहा इससे साभिप्राय विशेषण है और सखी को रंगीली कहने से भी वही अभिप्राय है ।

प्रेमगर्विता ।

मोरे बिन भौजी गुइयाँ पनियौ न
पीये मैया लहुरी बहिनियाँ अचेत ।
सुखवा सकल बलबिरवा के घर दुख
नैहर गवन नाहीँ देत ॥ ३८ ॥

रूपगर्विता ।

मोरी बहियाँ बतावै बलबिरवा सरो-
जवा क हरवा गरे में किन देत ।
जब मुँहवाँ कहला मोर चँदवा सारिस
कहु चँदवै निरखि किन लेत ॥ ३९ ॥

प्रोषितपतिका ।

पति के विदेश रहने के कारण जो नायिका संतापित हो उसे प्रोषितपतिका कहते हैं । यथा:—

फुलिहैं अनरवा सेमर कचनरवा
पलसवा गुलबवा अनन्त ।
बिरहा का बिरवा लगायो बलबिरवा सो
फुलिहै जो आयो है बसन्त ॥ ४० ॥

रजवा करत मोर रजवा मथुरवा में
हम सब भइलीं फकीर।
हमरी पिरितिया निबाहे कैसे ऊधो
बलबिरवा की जतिया अहीर ॥ ४१ ॥

खण्डिता।

दूसरी स्त्री के संभोग के चिन्ह सहित जिसका नायक प्रातः काल उसके घर आवे और वह कोप करे तो ऐसी स्त्री को खण्डिता कहते हैं। यथा:—

ओठवा के छोरवा कजरवा कपोलवा
पै पिकवा की परली लकीर।
तोरी करनी समुझ के करेजवा फटत
दरपनवां निहारो बलवीर ॥ ४२ ॥

तोरी लटपट पगिया औ डगमग
डगिया सु अगिया लगावै मोरे जान।
छाओ छाओ वही गेहिया लगाओ

जहँ नेहिया सु जाओ (जाओ) बल-
बिरऊ सुजान ॥ ४३ ॥

कलहान्तरिता—

जो नायिका अपने नायक से मानकर बैठे और मनाने पर न माने तथाच नायक के चले जाने पर पछतावे उसे कलहान्तरिता कहते हैं। यथाः—

मोहें अपनी करनियाँ समुझ के सज-
नियां री उठला करेजवा मे हाय ।
बिन बतियै कोहानी गोड़ परल्यौ न
मानी बलविरवा त गयल रिसाय ॥४४॥
अबरी कि बिरियां सजनिया सयानि-
या री गुइयां मोरी लजिया निभाव ।
कवनों जतनवां बहनवां बना के बल-
विरवा के गोड़वा पराव ॥ ४५ ॥

परकीया कलहान्तरिता ।

नहकै रिसानो बलबिरवा सयानो गु-
इयां रचिकै कसुरवाऽ मोर ।

इतनै कह्यो मैं हँस रतियाँ कहां ते
बस आवत अलसभरे भोर ॥ ४६ ॥

विप्रलब्धा ।

संकेत स्थान में अपने प्रिय को न पाकर जो स्त्री व्याकुल होती है उसे विप्रलब्धा कहते हैं। यथा:—

तन तपवा तयल, मन दपवा दयल,
धन-मुँहवा गयल मुरझाय ।
हिय सधवा हटल जासों जियरा पटल
बलबिरवा भेटल नाहीं हाय ॥ ४७ ॥

उत्कण्ठिता ।

नायक के संकेत स्थान पर न आने के कारण जो नायिका वितर्क करे उसे उत्कण्ठिता कहते हैं। यथा:—

डगरा के लोगवा से झगरा भयल
कीधौं बगरा के लोगवा नराज ।
सगरा रयन मोहि तकतै बितल बल-
बिरवा न आयल केहि काज ॥ ४८ ॥

वासकसज्जा ।

प्रिय के मिलने की आशा से जो नायिका अपने केलि-भवन का सामान एकट्ठा करै उसे वासकसज्जा कहते हैं। यथा:—

सुन सुन सजनी री गुन गुन गुनवा मैं
फुन फुन करल्यूँ गुमान ।
चुन चुन कलिया मैं सेजिया बिछौल्यूँ
कब ऐहैं बलबिरऊ सुजान ॥ ४९ ॥

स्वाधीनपतिका ।

जिस स्त्री का नायक उसके बश में रहै उसे स्वाधीन-पतिका कहते हैं। यथा:—

मुखवा निहारै तन मन तोपै वारै गोरी
आठो छन रहला हजूर ।
अपने हाथन तोर बरचा सवारै बलबि-
रवा त भयल बा मजूर ॥ ५० ॥

प्यारे की पियरिया जगत से नियरिया
सुनरिया अनूठी तोरी चाल ।

गोरी तोहँ कोरवा में अपने बैसौले
होला प्यारो बलबिरवा निहाल ॥५१॥

अभिसारिका ।

प्रिय से मिलने के निमित्त ज्यों नायिका अपने नायक के पास जावे अथवा उसे अपने पास बुलावे उसे अभिसारिका कहते हैं। यथा:—

चल चल गोइयाँ तोरी बलि बलि
जाऊं होला पल पल मनुआ उचाट।
फूलन-सेजरिया कोठरिया बिछौलै
बलबिरवा जोहला तोरी बाट ॥ ५२ ॥

प्रवत्स्यतपतिका ।

प्रिय के बिदेस जाने का हाल सुन कर जो नायिका व्याकुल हो उसे प्रवत्स्यतपतिका कहते हैं। यथा:—

दुखवा क बतिया नगीचवो न आवै
गुइयां हँसी खुसी रहला हमेस।
बजुआ सरकि कर-कँगना भयल सुनि
प्यारे क गवनवां बिदेस ॥ ५३ ॥

आगतपतिका ।

प्रिय के विदेस से आने पर जो नायिका प्रसन्न होती है उसे आगतपतिका कहते हैं । यथा:—

तनी तरकत आँख बाँई फरकत सिर
सारी सरकत अनुमान ।
हिया धरकत मोरी आँगी दरकत आज
ऐहैं बलबिरऊ सुजान ॥ ५४ ॥

फुटकार बिरहे ।

अनुकूल नायक ।

तोहरा दुलहवा जगत क उलहवा
सलहवा सुनत नाहीं एक ।
तो बिन सुनरिया न भावै कोऊ तिरिया
हौं कैले मानो किरिया क टेक ॥ ५५ ॥

परस्पर भाग्य वर्णन ।

लखि बनमाली सब तिरिया सिहालीं
धन धन गोरी तोहरा सोहाग ।

तोरी सी पियरिया के गरवा लगावै घन
प्यारे वलविरवा क भाग ॥ ५५ ॥

रूपक ।

गोरा गोरा रँग हौ भभुतवा रमौले
मानो सेली लाल ललिया लकीर ।
रुपवा क भिखिया पलकिया मैं माँगैं वल-
विरवा की अखियाँ फकीर ॥ ५६ ॥

झप झप झपकैलीँ सोई मानो गो-
रियारी झुक झुक करैंली सलाम ।
(तोरे) गोड़वा क धुरवा बरौनियां से
पोछैं वलविरवा क अँखिया गुलाम ॥५७॥

दूतीवचन ।

जनि घवरावै हवरावै मोरी गुइया
दैया काहे होली इतनी अधीर ।

दिनवां बहिनवां बहनवां न पाऊं मैं
रयनवां मिलैहौं बलबीर ॥ ५८ ॥

धृष्ट नायक ।

जागला मनोजवा निहरलै उरोजवा
सरोजवा सटल झीनी चीर ।
मोहें जमुना के बाहर निकसिवे न देला
ठाढ़ जोवना निहारै बलबीर ॥ ५९ ॥



उपन्यास।